International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ0 मानिक मोहन शुक्ल
श्री वेंकश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला, उत्तर प्रदेश

शोध छात्रा
जया त्रिपाठी
श्री वेंकश्वर विश्वविद्यालय
गजरौला, उत्तर प्रदेश

शिक्षा शास्त्रियों की दृष्टि में अभिरूचि सीखने की प्रक्रिया का प्रमुख कारक है तथा शैक्षिक उपलब्धि वस्तुतः अभिरूचियों का प्रतिफलन है। प्रस्तुत शोध आलेख छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेत : हिन्दी, शिक्षा, अभिरूचि, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक शिक्षा

विभिन्न शिक्षाशास्त्री अभिरूचि को सीखने का एक महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। बालक की किसी विषय में रूचि उसकी शैक्षिक उपलब्धि और अधिगम की तीव्रता को प्रभावित करती है। सफलतापूर्वक अधिगम के लिए सम्बन्धित विषय में उच्च कोटि की अभिरूचि होना आवश्यक है, क्योंकि एक अध्यापक अपने अध्यापन कौशल की सहायता से विषयवस्तु को छात्रों के सम्मुख चाहे कितने ही सशक्त रूप में प्रस्तुत करे, किन्तु यदि छात्र में उस विषय के प्रति रूचि ही नहीं है, तो न तो छात्र उस विषय–वस्तु को आत्मसात् कर पायेगा और न ही शिक्षक अपने प्रयास में सफल होगा। अतः उच्चकोटि के परिणाम एवं दक्षतापूर्वक अधिगम के लिए आवश्यक है कि छात्रों को उनकी रूचि के अनुसर ही विषयों का चयन करने के अवसर प्राप्त हों अन्यथा उन्हें असफलता का सामना करना पड़ सकता है। परनतु विषयों के चयन का निर्णय लेते समय आवश्यक है कि छात्र अपनी रूचियों को ठीक प्रकार से समझें, जिसके लिए एक अच्छे निर्देशक तथा परामर्शदाता की राय लेना महत्वपूर्ण हो सकता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सेकेण्डरी स्तर, छात्रों के अध्ययन की महत्वपूर्ण कड़ी है। इसी स्तर पर छात्र अपने आप को भावी जीवन के लिए तैयार करते हैं तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास में तीव्रता देखने को मिलती है। सेकेण्डरी स्तर पर छात्रों के ऊपर शैक्षिक क्षेत्र का अधिक दबाव होता है, इसके अतितरिक्त उन्हें अनेकों किशोरावस्था की समस्याओं का सामना भी इसी स्तर पर करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में छात्र अपनी रूचि के अनुसार पढ़ना चाहते हैं, परन्तु सेकेण्डरी स्तर पर वे इतने परिपक्व नहीं होते हैं, कि उनको इस बात का ज्ञान हो कि वो किस विषय को पढ़े तथा किसे न पढ़े। प्रत्येक अभिभावक अपने पाल्यों पर हिन्दी विषय के अध्ययन हेतु अधिक दबाव बनाते हैं। वह उसकी पूर्व प्रगति एवं अभिरूचियों पर ध्यान नहीं देते हैं। रूचियों के विपरीत विषयों का चुनाव छात्र के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है अर्थात् उनका मानसिक स्वास्थ्य खराब होने की संभावना रहती है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण –

रवीन्द्रनाथन (1983) ने अपने अध्ययन में हिन्दी विषय में शैक्षिक उपब्धि, रूचि तथा मानसिक स्वास्थ्य स्तर पर प्रभाव एवं उनके पारस्परिक सम्बन्ध के निष्कर्ष में पाया कि अंग्रेजी तथा मलयालय माध्यम वाले विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि, विज्ञान विषय में रूचि तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है। एम0एस0 वर्मा (1986) ने अपने अध्ययन में यह पाया कि विद्यार्थी की पारिवारिक पृष्ठभूमि, रूचि, समायोजन तथा व्यक्तित्व का उसकी उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। धर्मशिला मालवीय (1991) ने किशारों की हिन्दी के प्रति अभिवृत्ति तथा विज्ञान के प्रति रूचि एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों तथा उन्हें प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि जिन विद्यार्थियों की विज्ञान के प्रति अभिवृत्ति उच्च धनात्मक थी।

जे0एस0 पाधी (1993) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक आत्म संप्रत्यय तथा घरेलू वातावरण मे सार्थक सहसम्बन्ध है। टी0जे0 विद्यापति एण्ड रॉव (2003) ने पाया कि विद्यार्थियों की अधकांश श्रेणियों में सृजनात्मक योग्यता तथा वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। जिन

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

विद्यार्थियों की उच्च सृजनात्मक योग्यता थी, हिन्दी विषय में अच्छी उपलब्धि गयी। हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक–सांस्कतिक कारकों का सार्थक प्रीााव नहीं पाया गया। अनिल कुमार दुबे एवं रेखा प्रीति एवं अन्य (2008) ने अपने अध्ययन से निष्कर्ष निकाला कि योगाभ्यास करने वाले विद्यार्थियों की स्मृति तथा हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि योगाभ्यास न करने वाले विद्यार्थियों से अधिक पायी गयी।

प्रस्तुत शोध कार्य के निम्नवत् उद्देश्य हैं –

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी में रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की विज्ञान में रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध की परिकल्पना –

शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में शून्य परिकल्पना को चुना है। अनुसंधान के लिए शून्य परिकल्पना सर्वोत्तम होती है।

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की विज्ञान में रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं होता है।

परिसीमांकन –

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के 300–300 (60) छात्रों को प्रतिदर्श के रूप में चयन वर्गबद्ध प्रतिचयन विधि (Startified Random Sampling Technique) द्वारा किया गया।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद कानपुर के उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध 10–10 माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को उक्त चयन विधि द्वारा लिया गया है।

शोध विधि –

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका सम्बन्ध उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के सेकेण्डरी स्तर के 300–300 (600) छात्रों का सर्वेक्षण, आंकड़ों का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता के द्वारा स्तरीकृत यादृच्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से आँकड़ों का संकल्न किया गया है। शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के 10–10 विद्यालयों से क्रमशः 300–300 छात्रों का चयन दैव निदर्शन उपविधि (लाटर विधि) द्वारा चयन किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण –

इस अध्ययन हेतु श्रूोधकर्ता ने सेकेण्डरी विद्यालयों के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि के अध्ययन के लिए डॉ0 एल0 एन0 दुबे एवं डॉ0 अर्चना दुबे द्वारा निर्मित तथा शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन के लिए ''स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण'' का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने क्रान्तिक मान ज्ञात करके विज्ञान विषय में रूचि तथा शैक्षिक उपलब्ध का आंकलन कर निष्कर्ष प्राप्त किये हैं।

आंकड़ों का संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या –

शोधकर्ता ने विभिन्न सांख्यिकीय विधियों द्वारा निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए उनका विश्लेषण किया है। शोधकर्ता ने आंकड़ों की गणना हेतु सर्वप्रथम प्राप्त प्रदद्राों के आधार पर प्रत्येक चर का मध्यमान ज्ञात किया, इसके पश्चात् प्राप्त मध्यमान के आधान पर **प्रमाणिक विचलन निकाल, तत्पश्चात् छात्रों के चर हिन्दी विषय में रूचि तथा शैक्षिक उपलब्धि के तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्रान्तिक मान का प्रयोग किया।**

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका–01

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्र	300	35.13	5.06			
02	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर	300	34.00	4.29	0.38	21.97	**

	के छात्र						

**0.01 स्तर पर सार्थक

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों (N=300) की हिन्दी विषय में रूचि का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 35.13 एवं 34.00 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.06 व 4.29 पाया गया। दोनों के मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं इसके लिए क्रानितक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 2.97 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.56 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना –01, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि में कोई अन्तर नहीं होता है– निरस्त की जाती है।

तालिका–02

उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्र	300	43.79	10.29			

02	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्र	300	34.73	9.33	0.80	11.32	**

**0.01 स्तर पर सार्थक

प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट होता है उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों (N=300) की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि का परीक्षण ज्ञात करने पर प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 43.79 एवं 34.73 तथा मानक विचलन क्रमशः 10.29 व 9.33 पाया गया। दोनों के मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं इसके लिए क्रान्तिक अनुपात मान की गणना करने पर यह मान 11.32 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता सारणी में देखने से ज्ञात होता है कि यह मान 1.96 एवं 2.56 से अधिक पाया गया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

अतः परिकल्पना –02, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं होता है– निरस्त की जाती है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष –

1. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों (N=300) की हिन्दी विषय में रूचि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।
2. उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि में 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

शैक्षिक उपयोगिता एवं सुझाव –

1. प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के सेकेण्डरी स्तर के छात्रों की हिन्दी विषय में रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसे और अधिक व्यापक बनाने के लिए राज्य स्तर के विद्यालयों एवं अन्य स्तर के विद्यालयों पर अलग–अलग किया जा सकता है।
2. स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं पर हिन्दी विषय पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी विषय में रूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
4. यह अध्ययन उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों पर किया गया है इसको उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं पर भी लागू किया जा सकता है।
5. स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं पर विज्ञान विषय पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
6. महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं की हिन्दी विषय में शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
7. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल छात्रों पर शोधकार्य सम्मिलित रूप से एक साथ किया गया है। अतएव छात्र तथा छात्राओं पर अलग–अलग तुलनात्मक शोध कार्य उपर्युक्त विषय पर किया जा सकता है।
8. स्ववित्तपोषित तथा वित्तपोषित हिन्दी विषय की समस्याओं को दूर करने से सम्बन्धित उपायों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सन्दर्भ

1. कपिल, एच.के., अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा, 2004
2. गैरिट, हेनरी ई0, शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1989
3. गुप्ता, डॉ0 एस0पी0 एवं गुप्ता, अलका, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण, 2004
4. दुबे, अनिल कुमार एवं प्रीति रेखा एवं अन्य, 2008, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष–2, जुलाई–दिसम्बर 2008, 69–75
5. पाण्डेय, रामसकल, शैक्षिक नियोजन और वित्त प्रबन्धन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
6. पाधी, जे0एस0, इण्डियन एजूकेशनल एबस्ट्रेक्ट वाल्यूम–1, जुलाई 1996, पृष्ठ सं0–25
7. बुच, एम0बी0: सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वाल्यूम–1 क्रमांक–845, 863 पृष्ठ सं0–743 पृष्ठ सं0–743–753
8. बुच, एम0बी0: थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, वाल्यूम–1, पृ0सं0 1250, 1257, 886
9. वर्मा, प्रतिभा, 2008, C.T.E. National Journal, vol 4 No. 1 jan 2008, 29-31
10. विद्यापति, टी0जे0 एण्ड रॉव, जनरल ऑफ इण्डियन एजूकेशनल एबस्ट्रेक्ट मई 2003 पृष्ठ सं0–58–67
11. राय, पारसनाथ, अनुसंधान–परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 2007

Websites:

- www.eric.edu.gov
- www.dartmouth.edu
- www.enwikipedia.org/wiki
- www.google.co.in